शुक्रनीति में राजतंत्र की अवधारणा

अनिल कुमार उपाध्याय

वैदिक काल से शुक्रनीति तक राजतंत्रात्मक व्यवस्था अविच्छिन्न रूप में पायी जाती है। शुक्रनीति में राजतंत्र की व्यापक व्याख्या की गयी है। कामन्दक, शुक्र ने प्रभुसत्ता के सिद्धान्त का सामान्य विवेचन एवं समीक्षा किया है। 'अर्थशास्त्र' की तुलना में संक्षिप्त होते हुए भी शुक्रनीति का विषय–क्षेत्र विस्तृत है। इस ग्रन्थ में राजतंत्रात्मक–व्यवस्था का अध्ययन एवं अनुशीलन कुछ क्षेत्रों में लेखक की मौलिक प्रतिभा दर्शाती है। इस आशय में अर्थशास्त्रोत्तर काल में राजतंत्र की अवधारणा प्रस्तुत करने वाला यह एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।